संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

कला यस्मिन् प्रतिष्ठिताः
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

कलानिधि विभाग

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारक व्याख्यान में
आपको सादर आमंत्रित करता है

विषय : आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का संस्कृति-चिन्तन

— वक्ता —

प्रो. नन्दकिशोर आचार्य
एमेरिटस प्रोफ़ेसर
आईटीएम, ग्वालियर

— अध्यक्षता —

श्री रामबहादुर राय
अध्यक्ष
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास

— स्वागत एवं परिचय —

प्रो. रमेश चन्द्र गौड़
डीन (प्रशासन) एवं विभागाध्यक्ष, कलानिधि
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

22 अगस्त 2025 (शुक्रवार)
सायं 4:00 बजे

स्थान :
समवेत सभागार, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
जनपथ बिल्डिंग, जनपथ, नई दिल्ली

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी (19 अगस्त सन् 1907 -19 मई 1979)

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हिन्दी निबन्धकार, आलोचक और उपन्यासकार थे। सन् 1929 में संस्कृत साहित्य में शास्त्री और सन् 1930 में ज्योतिष विषय में शास्त्राचार्य की उपाधि प्राप्त की। 8 नवंबर 1930 को हिंदी शिक्षक के रूप में शांतिनिकेतन में कार्यारम्भ किया। आचार्य जी की हिंदी भवन, विश्वभारती के संचालक(सन् 1945 -1950) के पद पर तथा सन् 1957 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के पद पर नियुक्ति हुई। वे सन् 1957 में वें 'पद्मभूषण' उपाधि से सम्मानित हुए। सन् 1960 - 67 के दौरान पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में हिंदी के प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष रहे। 1967 के बाद पुनः काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में कुछ समय तक निदेशक के पद पर भी रहे। द्विवेदी जी हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत और बंगला भाषाओं के विद्वान थे। भक्तिकालीन साहित्य का उन्हें अच्छा ज्ञान था। उनकी लिखी दर्जनों से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, जिनमें से कबीर, नाथ संप्रदाय, हिन्दी साहित्य का आदिकाल, मेघदूत: एक पुरानी कहानी, हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास, अशोक के फूल, आलोक पर्व (साहित्य अकादमी पुरस्कार), बाणभट्ट की आत्मकथा, अनामदास का पोथा, संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो आदि प्रमुख रचनाएँ हैं।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संदर्भ पुस्तकालय ने वर्षों से प्रख्यात विद्वानों तथा कलाकारों के निजी पुस्तकालय को उपहार स्वरूप अंगीकार किया हैं। जो कला एवं सम्बन्धित अध्ययन के क्षेत्र में एक विशेष महत्त्व रखता है। प्रो. सुनीति कुमार चटर्जी, ठाकुर जयदेव सिंह, डॉ. कपिला वात्स्यायन, श्री देवेंद्र स्वरूप, प्रो. नामवर सिंह एवं श्री श्याम बेनेगल इनमें से कुछ प्रमुख निजी संग्रह हैं। इसी शृंखला के अन्तर्गत आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री मुकुन्द द्विवेदी ने सन् 1988 को आचार्य जी का 13,000 व्यक्तिगत पुस्तकों का दुर्लभ संग्रह इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संदर्भ पुस्तकालय में उपहार स्वरूप भेंट किया। उनके संग्रह में संस्कृत, पाली, प्राकृत और हिंदी रचनाओं के दुर्लभ संस्करण और आधुनिक भारतीय भाषाओं में रचनात्मक और महत्वपूर्ण लेखन का एक विशाल संग्रह शामिल है। धर्म और दर्शन पर भी बड़ी संख्या में पुस्तकें हैं।

प्रो. नन्दकिशोर आचार्य

31 अगस्त, 1945 को बीकानेर में जन्में नन्दकिशोर आचार्य को विविध विधाओं में अपनी सृजनात्मकता के लिए केन्द्रीय साहित्य अकादमी, केन्द्रीय संगीत-नाटक अकादमी, महात्मा गाँधी सम्मान, सुब्रह्मण्यम भारती पुरस्कार, राजस्थान साहित्य अकादमी के सर्वोच्च मीरा पुरस्कार, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी तथा बिहारी पुरस्कार के अतिरिक्त अन्य कई राष्ट्रीय पुरस्कारों से अलंकृत किया गया है। महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय में अतिथि लेखक तथा आईआईटी, हैदराबाद में प्रोफ़ेसर ऑफ एमेरिटस रहे, आचार्य ने प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर में अहिंसा-शान्ति ग्रंथमाला का संपादन किया है। हाल ही में वह आईटीएम, ग्वालियर में दो वर्ष एमेरिटस प्रोफ़ेसर के रूप में जुड़े रहे।

अज्ञेय द्वारा संपादित 'चौथा सप्तक' के कवि नन्दकिशोर आचार्य के अब तक इक्कीस कविता संग्रह, आठ नाटक, ग्यारह साहित्यिक आलोचना की पुस्तकों के अलावा अहिंसा-दर्शन, गाँधी विचार, मानवाधिकार, शिक्षा संस्कृति-विचार आदि पर अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

अज्ञेय, निर्मल वर्मा, विनोबा की संचयिताओं, अनेक उर्दू कवियों के संचयनों, गोविन्द मिश्र रचनावली, नेमिचन्द्र जैन रचनावली के सम्पादन के अतिरिक्त आचार्य ने 'अहिंसा विश्वकोश' का सम्पादन भी किया है। उन्होंने रियोकोन, ब्रॉडस्की, लोर्का, उंगारेती, अर्नाल्ड वेस्कर आदि की साहित्यिक रचनाओं के अतिरिक्त एम.एन. राय, हिरियन्ना, बर्ट्रेंड रसेल, डॉ. दयाकृष्ण आदि के वैचारिक लेखन, महात्मा गाँधी पर जोसेफ डोक, मुरिएल लेस्टर और बी.के. मल्लिक की पुस्तकों और अज्ञेय की अंग्रेज़ी कविताओं का भी हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया है। अनेक राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय समारोह में रचना-पाठ एवं व्याख्यानों के लिए आमन्त्रित आचार्य ने इंग्लैंड, चीन, बेल्जियम, दक्षिण अफ्रीका, नेपाल एवं इंडोनेशिया की साहित्यिक-शैक्षणिक यात्राएँ कर चुके हैं।